

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 15, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1 (Q1). विजयनगर साम्राज्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अमरा-नायक प्रणाली ने विजयनगर के शासकों को सैन्य कमांडरों को प्रशासनिक और राजस्व संरचना में एकीकृत करने में सक्षम बनाया, जबकि उन्हें उनके आवंटित क्षेत्रों में काफी स्वायत्तता की अनुमति दी।
2. अमरा-नायक वंशानुगत सामंत थे जिनके क्षेत्र विजयनगर शासक के सीधे वित्तीय और सैन्य नियंत्रण से पूरी तरह बाहर थे।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1 सही है। अमरा-नायक प्रणाली विजयनगर की राजनीतिक और सैन्य व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। अमरा-नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें ऐसे क्षेत्र आवंटित किए गए थे जिनसे वे राजस्व एकत्र करते थे। उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे सैनिकों का रखरखाव करें और आवश्यकता पड़ने पर विजयनगर शासक को सैन्य सहायता प्रदान करें।

यह प्रणाली केंद्रीय प्राधिकरण के प्रति निरंतर दायित्वों के साथ प्रत्यायोजित अधिकार को जोड़ती थी। नायकों को अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने, राजस्व एकत्र करने और सैन्य बलों को बनाए रखने में काफी स्वायत्तता प्राप्त थी, लेकिन इससे उनके क्षेत्र शासक से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो जाते थे।

कथन 2 इसलिए गलत है। अमरा-नायकों को "सीधे वित्तीय और सैन्य नियंत्रण से पूरी तरह बाहर" कहना एक अतिशयोक्ति है। इस संबंध में केंद्रीय प्राधिकरण के प्रति दायित्व शामिल थे, जिसमें नजराना/राजस्व भुगतान और सैन्य सेवा शामिल थी।

अधिक सूक्ष्म ऐतिहासिक मुद्दा यह है कि यह प्रणाली न तो पूर्ण केंद्रीकरण की थी और न ही पूर्ण सामंती स्वतंत्रता की। यह एक वार्तालाप-आधारित (negotiated) राजनीतिक संरचना का प्रतिनिधित्व करती थी, जिसमें शासक सर्वोपरि संप्रभुता बनाए रखने का प्रयास करते हुए शक्तिशाली सैन्य अभिजात वर्ग पर निर्भर रहता था। इस प्रकार, सही उत्तर (c) है।

प्रश्न 2 (Q2): निम्नलिखित में से कौन सा एक पारिस्थितिक अनुक्रमण (ecological succession) के पारिस्थितिक महत्व को सबसे अच्छी तरह समझाता है?

- (a) यह किसी व्यवधान के बाद एकल चरम प्रजाति (climax species) द्वारा सभी देशी प्रजातियों का स्थायी प्रतिस्थापन है।
- (b) यह समय के साथ समुदाय की संरचना और बनावट में पूर्वानुमानित परिवर्तनों का वर्णन करता है, जिसमें अक्सर पूर्व समुदायों द्वारा बनाई गई पर्यावरणीय स्थितियों में परिवर्तन शामिल होते हैं।
- (c) यह केवल पूरी तरह से बंजर क्षेत्रों में होता है जहाँ पहले कोई जीव या जैविक पदार्थ मौजूद नहीं था।
- (d) यह जलवायु और मृदा (edaphic) स्थितियों की परवाह किए बिना अनिवार्य रूप से अधिकतम प्रजाति विविधता वाले पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करता है।

उत्तर: (b)

व्याख्या: पारिस्थितिक अनुक्रमण समय के साथ प्रजातियों के संयोजन और समुदाय की संरचना में क्रमिक और दिशात्मक परिवर्तन को संदर्भित करता है। यह एक नए उजागर सबस्ट्रेट (प्राथमिक अनुक्रमण) पर या ऐसे क्षेत्र में हो सकता है जहाँ एक पूर्व समुदाय मौजूद था लेकिन वह बाधित हो गया था और कुछ मिट्टी या जैविक अवशेष बचे रह गए थे (द्वितीयक अनुक्रमण)।

महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक विशेषता यह है कि अनुक्रमण केवल प्रजातियों का प्रतिस्थापन मात्र नहीं है। जीव स्वयं पर्यावरणीय स्थितियों को संशोधित कर सकते हैं, जिससे यह प्रभावित होता है कि बाद में कौन सी प्रजातियाँ स्थापित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, शुरुआती colonisers (अधिवास बनाने वाले) मिट्टी की विशेषताओं, पोषक तत्वों की उपलब्धता और सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों को बदल सकते हैं, जिससे पर्यावरण बाद के समुदायों के लिए अधिक उपयुक्त हो जाता है।

विकल्प (a) गलत है क्योंकि अनुक्रमण का अंत अनिवार्य रूप से किसी एकल प्रजाति में नहीं होता है। विकल्प (c) गलत है क्योंकि अनुक्रमण पारिस्थितिकी तंत्र में व्यवधानों के बाद भी हो सकता है जहाँ मिट्टी, बीज, सूक्ष्मजीव और अन्य जैविक घटक बने रहते हैं। विकल्प (d) गलत है क्योंकि ऐसा कोई सार्वभौमिक नियम नहीं है कि अनुक्रमण को अधिकतम प्रजाति विविधता उत्पन्न करनी ही चाहिए; परिणामी समुदाय पर्यावरणीय और जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

वैचारिक भ्रम अनुक्रमण को सरल पारिस्थितिक प्रतिस्थापन के बराबर मानने से उत्पन्न होता है। इसे जीवों और उनके बदलते भौतिक वातावरण के बीच एक गतिशील अंतःक्रिया के रूप में बेहतर समझा जाता है। इसलिए, (b) सही है।

प्रश्न 3 (Q3): सरकारी बजट और राजकोषीय नीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- यदि उधार (borrowings) के अलावा अन्य सरकारी प्राप्तियों में पर्याप्त गिरावट आती है, तो सरकारी व्यय अपरिवर्तित रहने पर भी राजकोषीय घाटा बढ़ सकता है।
- राजस्व घाटे का तात्पर्य है कि सरकार केवल पूंजीगत संपत्तियों के निर्माण के लिए ही उधार ले रही है।
- राजकोषीय घाटे में से ब्याज भुगतानों को घटाकर प्राथमिक घाटा प्राप्त किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

राजकोषीय घाटा मोटे तौर पर उधार को छोड़कर कुल सरकारी प्राप्तियों पर कुल सरकारी व्यय के आधिक्य को दर्शाता है। इसलिए, यदि व्यय अपरिवर्तित भी रहता है, तो गैर-उधार प्राप्तियों में पर्याप्त गिरावट राजकोषीय घाटे को बढ़ा सकती है।

इसलिए, कथन 1 सही है।

कथन 2 गलत है। राजस्व घाटा तब होता है जब राजस्व व्यय राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो जाता है। यह इंगित करता है कि सरकार के पास अपने राजस्व व्यय को वित्तपोषित करने के लिए पर्याप्त राजस्व प्राप्तियां नहीं हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उधार का उपयोग विशेष रूप से पूंजीगत परिसंपत्ति निर्माण के लिए किया जा रहा है। वास्तव में, निरंतर राजस्व घाटे का अर्थ यह हो सकता है कि उधार आंशिक रूप से चालू व्यय को वित्तपोषित कर रहा है, जो राजकोषीय स्थिरता के संबंध में चिंताएं पैदा करता है।

कथन 3 सही है। प्राथमिक घाटा है:

प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान

इसका तर्क विश्लेषणात्मक है: ब्याज भुगतान काफी हद तक पिछली उधार प्रतिबद्धताओं को दर्शाते हैं, जबकि प्राथमिक घाटा पिछली उधार से विरासत में मिले ब्याज के बोझ को छोड़कर सरकार के वर्तमान राजकोषीय रुख का संकेत प्रदान करता है।

यह प्रश्न जानबूझकर तीन ऐसी अवधारणाओं में अंतर करता है जिन्हें अक्सर एक में मिला दिया जाता है:

- **राजकोषीय घाटा** → कुल उधार आवश्यकता।
- **राजस्व घाटा** → राजस्व प्राप्तियों पर राजस्व व्यय का आधिक्य।
- **प्राथमिक घाटा** → ब्याज भुगतानों को छोड़कर राजकोषीय घाटा।

इसलिए, दो कथन सही हैं, जिससे (b) सही उत्तर बन जाता है।

प्रश्न 4 (Q4): भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्षेत्रीय आकांक्षाएं आवश्यक रूप से राष्ट्रीय एकता के साथ असंगत नहीं हैं और उन्हें संवैधानिक और लोकतांत्रिक तंत्रों के माध्यम से समायोजित किया जा सकता है।
2. भाषाई राज्यों के गठन ने यह प्रदर्शित किया कि भारतीय संघ प्रत्येक क्षेत्रीय दावे को अलगतावादी माने बिना क्षेत्रीय मांगों का संस्थागत रूप से जवाब दे सकता है।

3. संवैधानिक ढांचा संसद को संबंधित राज्य विधानमंडल की सहमति को संसद पर बाध्यकारी बनाए बिना मौजूदा राज्यों की सीमाओं या नामों को बदलने की अनुमति देता है।
4. अधिक क्षेत्रीय स्वायत्तता की कोई भी मांग अनिवार्य रूप से भारतीय संघ से अलग होने की मांग के बराबर है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1, 2 और 3 सही हैं, जबकि कथन 4 गलत है।

कथन 1 सही है। क्षेत्रीय आकांक्षाएं राष्ट्रीय एकता के साथ सह-अस्तित्व में रह सकती हैं। भारत का संघीय ढांचा संवैधानिक और राजनीतिक तंत्र प्रदान करता है जिनके माध्यम से क्षेत्रीय मांगों को समायोजित किया जा सकता है। लोकतांत्रिक वार्ता, संघीय पुनर्गठन, विशेष प्रावधान और विकेंद्रीकरण - ये सभी समायोजन के साधन के रूप में कार्य कर सकते हैं।

कथन 2 सही है। राज्यों का भाषाई पुनर्गठन एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण उदाहरण है। भाषाई पहचान को अपने आप में राष्ट्र-विरोधी मानने के बजाय, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था ने अंततः क्षेत्रीय पुनर्गठन के माध्यम से प्रमुख भाषाई आकांक्षाओं को समायोजित किया।

कथन 3 सही है। अनुच्छेद 3 के तहत, संसद नए राज्य बना सकती है और मौजूदा राज्यों के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों को बदल सकती है। राष्ट्रपति ऐसे विधेयक को अपने विचार व्यक्त करने के लिए संबंधित राज्य विधानमंडल को भेजते हैं, लेकिन वे विचार संसद पर बाध्यकारी नहीं होते हैं। इसलिए, राज्य विधानमंडल की सहमति संवैधानिक रूप से आवश्यक नहीं है।

कथन 4 गलत है। यह मुख्य वैचारिक भ्रम है। क्षेत्रवाद एक स्पेक्ट्रम पर मौजूद है। एक मांग अधिक प्रशासनिक स्वायत्तता, भाषाई या सांस्कृतिक पहचान की मान्यता, संसाधनों के न्यायसंगत वितरण, विशेष संवैधानिक व्यवस्था या अधिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व से संबंधित हो सकती है। ऐसी मांगें स्वतः ही अलगाव का संकेत नहीं देती हैं। इसलिए, भारतीय संघवाद आंशिक रूप से क्षेत्रीय विविधता के समायोजन और संस्थागतीकरण के माध्यम से विकसित हुआ है।

अतः, तीन कथन सही हैं — (c)।

प्रश्न 5 (Q5): नीचे दिए गए कथन (Assertion) और दो कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

कथन (Assertion): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार आवश्यक रूप से किसी देश के सभी क्षेत्रों में समान आर्थिक परिणाम उत्पन्न नहीं करता है।

कारण I (Reason I): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ उन क्षेत्रों में केंद्रित हो सकते हैं जिनके पास बेहतर बुनियादी ढांचा, बाजार कनेक्टिविटी, विशेष उत्पादन क्षमताएं और प्रमुख परिवहन गलियारों तक पहुंच है।

कारण II (Reason II): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल उत्पादक क्षेत्र और विदेशी बाजार के बीच की निरपेक्ष भौगोलिक दूरी से प्रभावित होता है, परिवहन बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और संस्थागत स्थितियों की परवाह किए बिना।

निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

- (a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और वे दोनों कथन की व्याख्या करते हैं।
- (b) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण I ही कथन की व्याख्या करता है।
- (c) कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।
- (d) कारण I गलत है, लेकिन कारण II सही है।

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन (Assertion) सही है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एक ही देश के भीतर अत्यधिक असमान स्थानिक परिणाम उत्पन्न कर सकता है। व्यापार विस्तार से मिलने वाले लाभ घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से जुड़ने की विभिन्न क्षेत्रों की क्षमता पर निर्भर करते हैं।

कारण I सही है। कुशल सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों, हवाई अड्डों, रसद (logistics) नेटवर्क, दूरसंचार, औद्योगिक समूहों और स्थापित उत्पादन क्षमताओं वाले क्षेत्र सामान्यतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं। ऐसे लाभ निवेश को आकर्षित कर सकते हैं और क्षेत्रीय विशिष्टता को मजबूत कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, एक प्रमुख बंदरगाह तक सीधी पहुंच वाले तटीय औद्योगिक क्षेत्र को अन्यथा समान अंतर्देशीय क्षेत्र की तुलना में काफी कम लॉजिस्टिक्स लागत का सामना करना पड़ सकता है। इसी तरह, स्थापित औद्योगिक समूहों वाले क्षेत्र बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं (economies of scale), कुशल श्रम पूल और आपूर्तिकर्ता नेटवर्क से लाभ उठा सकते हैं।

कारण II गलत है। केवल भौगोलिक दूरी ही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की तीव्रता या लाभप्रदता निर्धारित नहीं करती है।

आधुनिक व्यापार परिवहन प्रौद्योगिकी, लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर, व्यापार समझौतों, टैरिफ, डिजिटल कनेक्टिविटी, आपूर्ति श्रृंखलाओं, संस्थागत गुणवत्ता और उत्पादन क्षमताओं द्वारा आकार लेता है।

यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के भूगोल को स्थान और कनेक्टिविटी के बीच अंतःक्रिया के माध्यम से समझा जाना चाहिए। एक भौगोलिक रूप से दूर का क्षेत्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बन सकता है यदि उसके पास कुशल लॉजिस्टिक्स और विशेष उत्पादन हो, जबकि एक भौगोलिक रूप से निकटतम क्षेत्र अपर्याप्त बुनियादी ढांचे के कारण वैश्विक बाजारों में खराब रूप से एकीकृत रह सकता है।

गहरी भौगोलिक अंतर्दृष्टि यह है कि वैश्वीकरण केवल भूगोल के महत्व को मिटाता नहीं है। इसके बजाय, यह कनेक्टिविटी, इंफ्रास्ट्रक्चर और पहुंच को तेजी से महत्वपूर्ण बनाकर भौगोलिक लाभों को पुनर्गठित करता है।

इसलिए, (c) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q1. नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप (Nancy Grace Roman Space Telescope) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह टेलीस्कोप निकट-अवरक्त (near-infrared) क्षेत्र में वाइड-फील्ड सर्वेक्षण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे यह तुलनीय अवलोकन समय में हबल स्पेस टेलीस्कोप (Hubble Space Telescope) की तुलना में आकाश के काफी बड़े क्षेत्र का अवलोकन करने में सक्षम होता है।
2. इसके वैज्ञानिक उद्देश्यों में डार्क एनर्जी (dark energy) और डार्क मैटर (dark matter) की जाँच करना शामिल है, जबकि इसके गुरुत्वाकर्षण माइक्रोलेंसिंग (gravitational microlensing) अवलोकन उन बाह्यग्रहों (exoplanets) का भी पता लगा सकते हैं जिन्हें पारंपरिक संक्रमण-आधारित (transit-based) सर्वेक्षणों के माध्यम से खोजना कठिन हो सकता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, तथा कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की व्याख्या नहीं करता है।

नैन्सी ग्रेस रोमन स्पेस टेलीस्कोप, जिसे पहले WFIRST के नाम से जाना जाता था, नासा का अगली पीढ़ी का अंतरिक्ष वेधशाला है। इसे मुख्य रूप से दृश्यमान (visible) और निकट-अवरक्त (near-infrared) तरंगदैर्घ्य में वाइड-फील्ड खगोलीय सर्वेक्षणों के लिए डिज़ाइन किया गया है। लगभग 2.4 मीटर के तुलनीय प्राथमिक-दर्पण व्यास को बनाए रखते हुए, इसका दृश्य-क्षेत्र (field of view) हबल टेलीस्कोप की तुलना में लगभग 100 गुना बड़ा है।

इसके वैज्ञानिक कार्यक्रम में डार्क एनर्जी, डार्क मैटर, बड़े पैमाने पर ब्रह्मांडीय संरचना और बाह्यग्रहों (exoplanets) की जाँच शामिल है। एक महत्वपूर्ण बाह्यग्रह तकनीक गुरुत्वाकर्षण माइक्रोलेंसिंग है। जब कोई अग्रभूमि वस्तु किसी दूरस्थ तारे की दृष्टि-रेखा (line of sight) के पर्याप्त करीब से गुजरती है, तो उसका गुरुत्वाकर्षण पृष्ठभूमि के तारे के प्रकाश को आवर्धित (magnify) कर सकता है। चमक में यह अस्थायी परिवर्तन अग्रभूमि प्रणाली से जुड़े ग्रहों को उजागर कर सकता है, जिनमें वे ग्रह भी शामिल हैं जो अपने मेजबान तारों के सामने से आसानी से पारगमन (transit) नहीं करते हैं।

वैचारिक भ्रम यह मान लेना है कि सभी अंतरिक्ष टेलीस्कोप मुख्य रूप से केवल उनके द्वारा अवलोकित तरंगदैर्घ्य में भिन्न होते हैं। रोमन की मुख्य पहचान विशेषता इसकी सर्वेक्षण वास्तुकला (survey architecture) भी है: यह एक बहुत ही विस्तृत क्षेत्र के साथ पर्याप्त संवेदनशीलता को जोड़ती है, जिससे यह बड़े सांख्यिकीय सर्वेक्षणों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बन जाती है।

इस प्रकार, दोनों कथन सही हैं, लेकिन दूसरा कथन टेलीस्कोप की वाइड-फील्ड क्षमता की व्याख्या करने के बजाय इसके वैज्ञानिक उद्देश्यों और कार्यप्रणाली का वर्णन करता है।

Q2. 1857 के विद्रोह से जुड़ी महारानी अवंतीबाई लोधी, निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से सबसे निकटता से जुड़ी हैं?

- (a) वर्तमान मध्य प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में रामगढ़
- (b) वर्तमान झारखंड के छोटा नागपुर पठार क्षेत्र में रामगढ़
- (c) वर्तमान उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में रामगढ़
- (d) वर्तमान राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में रामगढ़

उत्तर: (a)

व्याख्या: महारानी अवंतीबाई लोधी महाकौशल क्षेत्र में वर्तमान मध्य प्रदेश के डिंडोरी-मंडला क्षेत्र से जुड़ी एक रियासत रामगढ़ की रानी-संरक्षिका (queen-regent) थीं। वह 1857 के विद्रोह की महत्वपूर्ण क्षेत्रीय नेताओं में से एक बनीं।

उनका विरोध रामगढ़ के प्रशासन में ब्रिटिश हस्तक्षेप से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनके पति, राजा विक्रमादित्य सिंह की बीमारी और उनके नाबालिग बेटों के उत्तराधिकार के बाद, ब्रिटिश अधिकारियों ने रियासत को 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' (Court of Wards) के अधीन कर दिया और प्रशासक नियुक्त कर दिए। अवंतीबाई ने इस हस्तक्षेप का विरोध किया और बाद में क्षेत्र में एक प्रमुख ब्रिटिश विरोधी नेता के रूप में उभरीं।

उन्होंने प्रतिरोध संगठित किया, स्थानीय समर्थन जुटाया और बाद में देवहरगढ़ के आसपास के जंगली और पहाड़ी इलाकों से संचालन किया। उनके इस प्रतिरोध की परिणति अंततः मार्च 1858 में उनकी शहादत के रूप में हुई।

यह प्रश्न जानबूझकर भारत के विभिन्न भागों में "रामगढ़" नाम की पुनरावृत्ति का उपयोग करता है। UPSC-शैली मैपिंग के लिए केवल स्थान के नाम को पहचानने के बजाय, अवंतीबाई से जुड़े ऐतिहासिक रामगढ़ की पहचान करना आवश्यक है।

इसलिए, (a) सही है।

Q3. रेमन मैगसेसे पुरस्कार (Ramon Magsaysay Award) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसकी स्थापना 1957 में फिलीपींस के पूर्व राष्ट्रपति रेमन मैगसेसे के सम्मान में की गई थी।
2. 2009 से, पुरस्कार फाउंडेशन ने इमर्जेंट लीडरशिप (Emergent Leadership) को छोड़कर, पहले की निश्चित श्रेणी-आधारित संरचना को समाप्त कर दिया है।
3. यह पुरस्कार विशेष रूप से फिलीपींस के नागरिकों तक ही सीमित है क्योंकि यह एक फिलीपीन राष्ट्रपति की स्मृति में दिया जाता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। रेमन मैगसेसे पुरस्कार की स्थापना 1957 में फिलीपींस के सातवें राष्ट्रपति रेमन मैगसेसे के सम्मान में की गई थी, जिनकी मार्च 1957 में एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। इस पुरस्कार का उद्देश्य एशिया में अनुकरणीय सार्वजनिक सेवा और नेतृत्व को मान्यता देना है।

कथन 2 सही है। इस पुरस्कार में मूल रूप से कई परिभाषित श्रेणियां थीं, जिनमें शासकीय सेवा, सार्वजनिक सेवा, सामुदायिक नेतृत्व, पत्रकारिता/साहित्य/रचनात्मक संचार कला, शांति और अंतर्राष्ट्रीय समझ, तथा इमर्जेंट लीडरशिप शामिल थीं। 2009 से, निश्चित श्रेणी संरचना को काफी हद तक समाप्त कर दिया गया, जिससे फाउंडेशन को विभिन्न क्षेत्रों में योगदान को मान्यता देने में अधिक लचीलापन मिला, जबकि इमर्जेंट लीडरशिप बरकरार रही।

कथन 3 गलत है। यह पुरस्कार फिलीपींस के नागरिकों तक सीमित नहीं है। इसकी भौगोलिक और संस्थागत पहचान एशियाई है, और यह एशियाई समाजों के लिए असाधारण नेतृत्व और सेवा का प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों और संगठनों को मान्यता देता है। खुद 2026 के विजेता इस बात का उदाहरण हैं: सिंगापुर के टॉमी कोह, बांग्लादेश की रूना खान और म्यांमार के बो ची को सम्मानित किया गया।

भ्रम पैदा करने वाला बिंदु पुरस्कार की राष्ट्रीय उत्पत्ति को उसके क्षेत्रीय दायरे के साथ मिलाना है।

इसलिए, दो कथन सही हैं — (b)।

Q4. भारत के संविधान के अनुच्छेद 142 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अनुच्छेद 142 सर्वोच्च न्यायालय को उसके समक्ष लंबित किसी भी मामले या विषय में 'पूर्ण न्याय' करने के लिए आवश्यक आदेश पारित करने की शक्ति प्रदान करता है।
2. अनुच्छेद 142 के तहत शक्ति भारत के प्रत्येक संवैधानिक न्यायालय को समान रूप से उपलब्ध है।
3. अनुच्छेद 142 के तहत सर्वोच्च न्यायालय की शक्ति संवैधानिक रूप से व्युत्पन्न है और इसलिए यह वैचारिक रूप से उन शक्तियों से अलग है जो कोई न्यायालय केवल इसलिए प्रयोग करता है क्योंकि कोई साधारण कानून उन्हें प्रदान करता है।
4. अनुच्छेद 142 की उपस्थिति सर्वोच्च न्यायालय को मौलिक अधिकारों की अनदेखी करने की अनुमति देती है जब भी वह वास्तविक न्याय प्राप्त करने के लिए ऐसा विचलन आवश्यक समझता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 और 4 गलत हैं।

कथन 1 सही है। अनुच्छेद 142(1) सर्वोच्च न्यायालय को ऐसा निर्णय या आदेश देने की शक्ति प्रदान करता है जो उसके समक्ष लंबित किसी भी मामले या विषय में "पूर्ण न्याय" (complete justice) करने के लिए आवश्यक हो। यह एक असाधारण संवैधानिक शक्ति है जिसका उद्देश्य न्यायालय को असाधारण परिस्थितियों में उपयुक्त समाधान प्रदान करने में सक्षम बनाना है।

कथन 2 गलत है। अनुच्छेद 142 विशेष रूप से भारत के सर्वोच्च न्यायालय में निहित एक शक्ति है। उच्च न्यायालयों के पास अनुच्छेद 226 के तहत समान संवैधानिक शक्ति नहीं है।

कथन 3 सही है। अनुच्छेद 142 अपना अधिकार सीधे संविधान से प्राप्त करता है। यह इसे उन साधारण न्यायिक शक्तियों से अलग बनाता है जो संसद या राज्य विधानमंडल द्वारा विशेष क्षेत्राधिकार या उपचारात्मक शक्तियाँ प्रदान करने वाले कानून के लागू करने के कारण अस्तित्व में आती हैं।

कथन 4 गलत है। "पूर्ण न्याय" अभिव्यक्ति एक असीमित न्यायिक शक्ति का निर्माण नहीं करती है। अनुच्छेद 142 का प्रयोग संवैधानिक सीमाओं के अधीन रहता है। सर्वोच्च न्यायालय ने स्वीकार किया है कि इस शक्ति का उपयोग वैधानिक प्रावधानों को नष्ट करने या मौलिक संवैधानिक गारंटियों का उल्लंघन करने के लिए नहीं किया जा सकता है।

इसलिए महत्वपूर्ण UPSC अंतर असाधारण संवैधानिक शक्ति और असीमित संवैधानिक शक्ति के बीच है। अनुच्छेद 142 असाधारण रूप से व्यापक है, लेकिन यह संवैधानिक सीमाओं के बिना न्यायिक कानून बनाने का लाइसेंस नहीं है।

अतः, दो कथन सही हैं — (b)।

Q5. सेमीकॉन 2.0 (Semicon 2.0) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह चिप डिज़ाइन, उन्नत पैकेजिंग, सामग्री, उपकरण और विशेष R&D जैसी गतिविधियों का समर्थन करके फैब्रिकेशन से परे भारत के सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने का प्रयास करता है।
2. इसकी नीति संरचना में प्रत्येक श्रेणी पर समान सब्सिडी दर लागू करने के बजाय विभिन्न सेमीकंडक्टर विनिर्माण और पैकेजिंग गतिविधियों के लिए विभेदित वित्तीय सहायता शामिल है।
3. यह कार्यक्रम विदेशी सेमीकंडक्टर निर्माताओं को आकर्षित करने तक ही सीमित है और भारतीय स्वामित्व वाली बौद्धिक संपदा या घरेलू चिप-डिज़ाइन क्षमताओं के लिए नीतिगत सहायता प्रदान नहीं करता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। सेमीकॉन 2.0 सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। सेमीकंडक्टर निर्माण को केवल एक फैब्रिकेशन सुविधा के समान मानने के बजाय, यह ढांचा

फैबलेस चिप डिज़ाइन, सिलिकॉन और कंपाउंड-वेफर फैब्रिकेशन, ATMP/OSAT, उपकरण, सामग्री, विशेष रसायन, R&D और प्रतिभा विकास सहित क्षेत्रों को कवर करता है।

यह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सेमीकंडक्टर लचीलापन पूरी मूल्य श्रृंखला (value chain) पर निर्भर करता है। एक देश जिसके पास फैब्रिकेशन प्लांट है, लेकिन उपकरण, विशेष रसायनों, पैकेजिंग या डिज़ाइन IP के लिए विदेशी स्रोतों पर निर्भर रहता है, उसे अभी भी महत्वपूर्ण आपूर्ति-श्रृंखला की कमियों का सामना करना पड़ सकता है।

कथन 2 सही है। सेमीकॉन 2.0 विभेदित सहायता तंत्रों का उपयोग करता है। यह ढांचा, उदाहरण के लिए, बड़े सिलिकॉन फैब्स, कंपाउंड-सेमीकंडक्टर और अन्य फैब्स, उन्नत पैकेजिंग और विरासत ATMP/OSAT सुविधाओं के लिए वित्तीय सहायता के विभिन्न स्तर प्रदान करता है। यह एक समान सब्सिडी के बजाय एक अंशांकित (calibrated) प्रोत्साहन संरचना को दर्शाता है।

कथन 3 गलत है। यह कार्यक्रम स्पष्ट रूप से भारतीय स्वामित्व वाली बौद्धिक संपदा (IP), फैबलेस चिप डिज़ाइन और घरेलू सेमीकंडक्टर क्षमताओं को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। यह स्टार्टअप्स और MSMEs के लिए EDA एक्सेस, मल्टी-प्रोजेक्ट वेफर सेवाएं और माइलस्टोन-लिंकड सहायता जैसे तंत्र भी प्रदान करता है।

गहरा नीतिगत अंतर सेमीकंडक्टर क्षमता को आकर्षित करने और सेमीकंडक्टर संप्रभुता का निर्माण करने के बीच है। सेमीकॉन 2.0 सहायता को फैब्स से आगे बढ़ाकर डिज़ाइन, IP, सामग्री, उपकरण, पैकेजिंग, R&D और कुशल जनशक्ति में विस्तारित करके बाद वाले मुद्दे को संबोधित करने का प्रयास करता है।

इसलिए, दो कथन सही हैं — (b)।

Q6. हाल ही में अपने रणनीतिक महत्व के लिए खबरों में रहा लारक द्वीप (Larak Island), निम्नलिखित में से किस भौगोलिक स्थिति में स्थित है?

- (a) होर्मुज की जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) में, ईरानी तट के पास तथा केशम (Qeshm) और होर्मुज द्वीपों के निकट
- (b) बाब-अल-मंदेब (Bab-el-Mandeb) में, यमन और जिबूती के बीच
- (c) मलक्का की जलडमरूमध्य (Strait of Malacca) में, सुमात्रा और मलय प्रायद्वीप के बीच
- (d) बोस्फोरस (Bosporus) में, काला सागर और मारमारा सागर के बीच

उत्तर: (a)

व्याख्या: लारक द्वीप होर्मुज की जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) में स्थित एक छोटा ईरानी द्वीप है, जो ईरानी मुख्य भूमि के करीब और केशम द्वीप तथा होर्मुज द्वीप के निकट है।

इसका महत्व मुख्य रूप से इसकी भौगोलिक स्थिति से प्राप्त होता है। होर्मुज की जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री चोकपॉइंट्स (chokepoints) में से एक है क्योंकि यह फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी और परिणामस्वरूप, अरब सागर एवं व्यापक हिंद महासागर प्रणाली से जोड़ती है।

लारक की स्थिति इसे समुद्री निगरानी और नियंत्रण के लिए महत्व प्रदान करती है। यह द्वीप ईरानी सैन्य बुनियादी ढांचे और नौसैनिक गतिविधियों से भी जुड़ा रहा है। महत्वपूर्ण शिपिंग लेन से इसकी निकटता इसे खाड़ी के माध्यम से ऊर्जा परिवहन की सुरक्षा के लिए रणनीतिक रूप से प्रासंगिक बनाती है।

यह प्रश्न जानबूझकर चोकपॉइंट भूगोल के इर्द-गिर्द तैयार किया गया है। बाब-अल-मंदेब लाल सागर-अदन की खाड़ी के कनेक्शन से जुड़ा है; मलक्का की जलडमरूमध्य हिंद महासागर और प्रशांत समुद्री प्रणालियों को जोड़ती है; और बोस्फोरस काला सागर को मारमारा सागर से जोड़ता है।

इस प्रकार, (a) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS-1

Q1. "औद्योगिक क्रांति केवल एक तकनीकी परिवर्तन नहीं थी; इसने उत्पादन, श्रम, बाजारों और साम्राज्यवाद के बीच संबंधों को मौलिक रूप से बदल दिया।" चर्चा कीजिए।

उत्तर: अठारहवीं शताब्दी में ब्रिटेन से शुरू हुई और बाद में यूरोप एवं विश्व के अन्य भागों में फैली औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) ने आर्थिक उत्पादन के संगठन में एक संरचनात्मक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व किया। इसका महत्व केवल मशीनों के आविष्कार तक सीमित नहीं था; इसने श्रम के पैटर्न, शहरीकरण, व्यापार और उपभोग को गहराई से बदला तथा अंततः यूरोपीय साम्राज्यवाद के विस्तार और सुदृढीकरण में योगदान दिया।

इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम छोटे पैमाने के, विकेंद्रीकृत उत्पादन से यंत्रीकृत कारखाना उत्पादन (mechanised factory production) की ओर संक्रमण था। स्पिनिंग जेनी (spinning jenny), वॉटर फ्रेम (water frame), स्पिनिंग म्यूल (spinning mule) और पावर लूम (power loom) जैसे नवाचारों ने कपड़ा उत्पादन का पूरी तरह से कायाकल्प कर दिया। इसके बाद भाप के इंजन (steam engine) ने यांत्रिक शक्ति का एक बहुमुखी स्रोत प्रदान किया। उत्पादन कारखानों में केंद्रित हो गया, जहाँ पूंजी, मशीनरी और श्रम को केंद्रीकृत देखरेख में एक साथ लाया गया।

इस बदलाव ने श्रम की प्रकृति को मौलिक रूप से बदल दिया। कारीगरों और हस्तशिल्पियों को यंत्रीकृत उत्पादन से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा, जबकि मजदूरी पर आधारित श्रम (wage labour) औद्योगिक रोजगार का प्रमुख रूप बन गया। श्रमिकों को लंबे कार्य घंटे, कम मजदूरी, असुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और रोजगार की अनिश्चितता से जूझना पड़ा। औद्योगिक श्रमिक वर्ग के उदय ने आगे चलकर ट्रेड यूनियनवाद, मजदूर आंदोलनों और समाजवादी विचारधाराओं के विकास को गति दी।

औद्योगिक क्रांति ने अभूतपूर्व शहरीकरण को जन्म दिया। कोयला खदानों, बंदरगाहों, नदियों और विनिर्माण केंद्रों के आसपास औद्योगिक शहरों का विस्तार हुआ। हालाँकि, तीव्र शहरी विकास पर्याप्त स्वच्छता, आवास और सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे से पहले हो गया, जिससे अत्यधिक भीड़भाड़ और बीमारियाँ उत्पन्न हुईं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसका प्रभाव उतना ही महत्वपूर्ण था। यंत्रीकृत यूरोपीय उद्योगों को कच्चे माल और विस्तृत बाजारों की आवश्यकता थी। उदाहरण के लिए, सूती वस्त्रों ने कच्चे कपास की माँग बढ़ा दी, जबकि औद्योगिक उत्पादों को विदेशी बाजारों की आवश्यकता थी। इसने औपनिवेशिक आर्थिक संरचनाओं को सुदृढ़ किया। उपनिवेशों को कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता और निर्मित उत्पादों के उपभोक्ता के रूप में साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्थाओं में एकीकृत किया जाने लगा।

इस प्रकार, औद्योगीकरण और साम्राज्यवाद के बीच का संबंध परस्पर एक-दूसरे को मजबूती प्रदान करने वाला था। औद्योगिक क्षमताओं ने यूरोपीय सैन्य और आर्थिक शक्ति को मजबूत किया, जबकि औपनिवेशिक संपत्तियों ने संसाधनों और बाजारों तक पहुँच को आसान बनाया।

हालाँकि, औद्योगीकरण ने नई संभावनाओं को भी जन्म दिया। रेलवे, स्टीमशिप और टेलीग्राफ नेटवर्क ने परिवहन और संचार लागत को काफी कम कर दिया, जिससे एक परस्पर जुड़ी हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण में मदद मिली।

निष्कर्षतः, औद्योगिक क्रांति को केवल एक तकनीकी सफलता के बजाय एक सभ्यतागत परिवर्तन के रूप में समझा जाना चाहिए। इसने सामाजिक वर्गों को पुनर्गठित किया, परिदृश्यों को बदला, वैश्विक व्यापार का पुनर्गठन किया और यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्ति को मजबूत किया, जबकि साथ ही सामाजिक न्याय की मांग करने वाली नई राजनीतिक विचारधाराओं और आंदोलनों को जन्म दिया।

GS-2

Q2. "भारत में पर्यावरण शासन (environmental governance) को विखंडित नियामक प्रशासन से एकीकृत, सहभागितापूर्ण और पारिस्थितिकी-आधारित शासन की ओर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है।" परीक्षण कीजिए।

उत्तर: पर्यावरण शासन का तात्पर्य उन संस्थागत व्यवस्थाओं से है जिनके माध्यम से समाज प्राकृतिक संसाधनों, प्रदूषण, संरक्षण और पारिस्थितिक जोखिमों से संबंधित निर्णय लेता है। भारत में, पर्यावरण शासन संवैधानिक प्रावधानों, विधानों, न्यायिक हस्तक्षेपों और विशेष संस्थानों के माध्यम से विकसित हुआ है। फिर भी, पर्यावरणीय समस्याओं की बढ़ती जटिलता के लिए विखंडित विनियमन (fragmented regulation) से एकीकृत और सहभागितापूर्ण शासन की ओर बदलाव आवश्यक है।

भारत के पास एक व्यापक कानूनी ढांचा है, जिसमें पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986, वन (संरक्षण) ढांचा, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, जल अधिनियम और वायु अधिनियम शामिल हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) और विभिन्न मंत्रालय पर्यावरण शासन में योगदान करते हैं।

हालाँकि, पर्यावरणीय समस्याएँ अक्सर प्रशासनिक सीमाओं को पार कर जाती हैं। एक नदी घाटी (river basin) कई राज्यों में फैली हो सकती है; वायु प्रदूषण एक अधिकार क्षेत्र में उत्पन्न होकर दूसरे को प्रभावित कर सकता है; भूजल की कमी कृषि पद्धतियों, ऊर्जा सब्सिडी और शहरीकरण से एक साथ जुड़ी हो सकती है। इसलिए, केवल एक विभागीय दृष्टिकोण नीतिगत विखंडन (policy fragmentation) को जन्म दे सकता है।

एक पारिस्थितिकी-आधारित दृष्टिकोण (ecosystem-based approach) पारिस्थितिक प्रणालियों को परस्पर जुड़ी इकाइयों के रूप में मानकर इस समस्या को हल करने का प्रयास करता है। नदी-घाटी प्रबंधन, परिदृश्य-स्तरीय संरक्षण और एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन ऐसे दृष्टिकोणों के उदाहरण हैं जो पारिस्थितिक अंतर-निर्भरता को स्वीकार करते हैं।

जनभागीदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों के पास अक्सर वनों, जल संसाधनों और जैव विविधता का विस्तृत पारंपरिक ज्ञान होता है। ग्राम सभाएँ, संयुक्त वन प्रबंधन संरचनाएँ और समुदाय-आधारित संरक्षण तंत्र वैधता और कार्यान्वयन दोनों में सुधार कर सकते हैं।

पर्यावरण शासन में अधिक पारदर्शिता की भी आवश्यकता है। पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA), प्रदूषण डेटा, उपग्रह निगरानी और सार्वजनिक प्रकटीकरण नागरिकों को पर्यावरणीय निर्णयों की जाँच करने में सक्षम बना सकते हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ वायु और जल गुणवत्ता की रीयल-टाइम निगरानी को और मजबूत कर सकती हैं।

न्यायपालिका ने भी एहतियाती सिद्धांत (precautionary principle), 'प्रदूषक भुगतान करे' सिद्धांत (polluter-pays principle) और सतत विकास जैसे सिद्धांतों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, न्यायिक हस्तक्षेप मजबूत कार्यकारी क्षमता और जवाबदेह नियामक संस्थाओं का विकल्प नहीं हो सकता।

एक प्रमुख चुनौती विकास की आवश्यकताओं के साथ पर्यावरण संरक्षण का संतुलन बनाना है। सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए बुनियादी ढांचा, औद्योगीकरण और शहरीकरण आवश्यक हैं, लेकिन निर्णय लेने में पारिस्थितिक लागतों को शामिल किया जाना चाहिए। इसलिए पर्यावरण शासन को उस दृष्टिकोण से आगे बढ़ना चाहिए जहाँ पर्यावरण पर केवल विकास परियोजना का खाका तैयार होने के बाद विचार किया जाता है।

आगे का रास्ता नियामक क्षमता को मजबूत करने, अंतर-सरकारी समन्वय में सुधार करने, निर्णय लेने के विकेंद्रीकरण, वैज्ञानिक साक्ष्यों को शामिल करने, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने और परियोजना-विशिष्ट के बजाय संचयी (cumulative) पर्यावरण आकलन विकसित करने में निहित है।

इस प्रकार, प्रभावी पर्यावरण शासन के लिए क्षेत्र-विशिष्ट विनियमन से पारिस्थितिक एकीकरण, प्रशासनिक नियंत्रण से सहभागितापूर्ण शासन, और प्रतिक्रियाशील क्षति नियंत्रण से निवारक स्थिरता की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

GS-3

Q3. "वैश्वीकरण आर्थिक विकास के अवसर पैदा करता है, लेकिन इसके विकासात्मक परिणाम काफी हद तक घरेलू क्षमताओं और संस्थागत तैयारियों पर निर्भर करते हैं।" चर्चा कीजिए।

उत्तर: वैश्वीकरण (Globalisation) का तात्पर्य व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, वित्त और उत्पादन नेटवर्क के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के बढ़ते एकीकरण से है। 1991 में शुरू हुए भारत के आर्थिक सुधारों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ इसके एकीकरण को काफी बढ़ा दिया। हालाँकि, वैश्वीकरण स्वचालित रूप से एक समान लाभ पैदा नहीं करता है। इसके परिणाम प्रतिभागी अर्थव्यवस्थाओं की उत्पादक क्षमताओं, मानव पूंजी, बुनियादी ढांचे और संस्थागत गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं।

वैश्वीकरण का एक प्रमुख लाभ अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक बढ़ती पहुँच है। भारतीय फर्म बहुत बड़े उपभोक्ता आधार को सामान और सेवाएँ बेच सकती हैं। भारत का सूचना-प्रौद्योगिकी (IT) और बिजनेस-प्रोसेस-मैनेजमेंट (BPM) क्षेत्र यह दर्शाता है कि कैसे कुशल मानव पूंजी को वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में एकीकृत किया जा सकता है।

वैश्वीकरण ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), प्रौद्योगिकी और प्रबंधकीय प्रथाओं के प्रवाह को भी सुगम बनाया है। बहुराष्ट्रीय निगम उन्नत उत्पादन तकनीकों को पेश कर सकते हैं और घरेलू फर्मों को अंतर्राष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं (global value chains) में एकीकृत कर सकते हैं।

उपभोक्ताओं को अधिक उत्पाद विविधता, प्रतिस्पर्धी कीमतों और बेहतर गुणवत्ता के माध्यम से लाभ हो सकता है। प्रतिस्पर्धा घरेलू फर्मों को अधिक उत्पादक और तकनीकी रूप से उन्नत बनने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

हालाँकि, लाभ असमान हैं। तकनीकी क्षमताओं, वित्त तक पहुँच और कुशल श्रम वाली फर्मों को आमतौर पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए बेहतर स्थिति में माना जाता है। छोटे उद्यमों को तीव्र प्रतिस्पर्धी दबावों का सामना करना पड़ सकता है। इसी तरह, विशेष कौशल वाले श्रमिक वैश्वीकरण से लाभान्वित हो सकते हैं, जबकि संवेदनशील क्षेत्रों के श्रमिकों को रोजगार विस्थापन या मजदूरी के दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

कृषि इस जटिलता को दर्शाती है। वैश्विक बाजारों के साथ एकीकरण निर्यात के अवसर पैदा कर सकता है लेकिन किसानों को अस्थिर अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और बदलती व्यापार नीतियों के जोखिम में भी डाल सकता है। इसलिए,

वैश्वीकरण को फसल बीमा, बाजार की जानकारी, भंडारण बुनियादी ढांचे और कुशल आपूर्ति श्रृंखला जैसी पूरक घरेलू संस्थाओं की आवश्यकता होती है।

बुनियादी ढांचा एक अन्य निर्णायक कारक है। विश्वसनीय बिजली, सड़कों, बंदरगाहों, रसद (logistics) और डिजिटल कनेक्टिविटी वाला क्षेत्र ऐसे बुनियादी ढांचे से रहित क्षेत्र की तुलना में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सकता है।

संस्थानों की गुणवत्ता भी मायने रखती है। अनुमानित कराधान, अनुबंध प्रवर्तन, बौद्धिक संपदा संरक्षण, कुशल सीमा शुल्क प्रक्रियाएं और पारदर्शी विनियमन लेनदेन लागत को कम कर सकते हैं और निवेश को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इसलिए, उचित नीतिगत प्रतिक्रिया न तो पूर्ण संरक्षणवाद है और न ही बिना शर्त खुलापन। भारत को घरेलू क्षमता निर्माण के साथ-साथ वैश्विक बाजारों के साथ रणनीतिक एकीकरण की आवश्यकता है।

कौशल विकास, अनुसंधान एवं विकास (R&D), लॉजिस्टिक्स, MSME प्रतिस्पर्धात्मकता, सेमीकंडक्टर निर्माण, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और निर्यात विविधीकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियां वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अधिक हिस्सेदारी हासिल करने की भारत की क्षमता को बढ़ा सकती हैं।

निष्कर्षतः, वैश्वीकरण को एक स्वचालित विकास तंत्र के बजाय एक "अवसर संरचना" के रूप में देखा जाना चाहिए। मजबूत उत्पादक और संस्थागत क्षमताओं वाले देश व्यापक आर्थिक लाभों में वैश्विक एकीकरण को बदलने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। इसलिए भारत के लिए नीतिगत चुनौती खुलेपन को लचीलेपन के साथ, प्रतिस्पर्धात्मकता को सामाजिक सुरक्षा के साथ, और वैश्विक एकीकरण को घरेलू क्षमता निर्माण के साथ जोड़ना है।

GS-4

Q4. "नैतिक लोक प्रशासन के लिए केवल नियमों का पालन करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि संवैधानिक मूल्यों द्वारा निर्देशित तर्कसंगत विवेक (reasoned discretion) का प्रयोग करना भी आवश्यक है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर: लोक प्रशासन (Public Administration) कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं के दायरे में काम करता है। मनमानेपन, पक्षपात और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए नियम-आधारित प्रशासन अनिवार्य है। हालाँकि, सुशासन को नियमों के यांत्रिक अनुपालन तक सीमित नहीं किया जा सकता। लोक अधिकारियों को अक्सर ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जहाँ किसी नियम का कठोर अनुप्रयोग निष्पक्षता, करुणा या व्यापक जनहित के साथ संघर्ष कर सकता है। इसलिए, नैतिक प्रशासन के लिए कानून और संवैधानिक नैतिकता की सीमाओं के भीतर 'तर्कसंगत विवेक' (reasoned discretion) के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

नियम पूर्वानुमानितता और समानता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी सरकारी कल्याणकारी योजना के लिए पात्रता मानदंड यह सुनिश्चित करते हैं कि समान स्थिति वाले नागरिकों के साथ समान मानकों के अनुसार व्यवहार किया जाए। केवल व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के आधार पर ऐसे नियमों की अनदेखी करने से भेदभाव पैदा हो सकता है।

साथ ही, ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं जहाँ प्रक्रियात्मक अनुपालन का सख्ती से पालन करने पर वास्तविक अन्याय होता है। मान लीजिए कि कोई कल्याणकारी लाभार्थी समय सीमा से चूक जाता है क्योंकि प्राकृतिक आपदा ने क्षेत्र में संचार बाधित कर दिया है। एक नैतिक रूप से संवेदनशील अधिकारी को आवेदन को यांत्रिक रूप से खारिज करने के बजाय यह जांच करनी चाहिए कि क्या कानूनी ढांचा समय सीमा विस्तार, समीक्षा या वैकल्पिक तंत्र की अनुमति देता है।

यह प्रक्रियात्मक समानता (procedural equality) और वास्तविक न्याय (substantive justice) के बीच अंतर को स्पष्ट करता है।

संवैधानिक मूल्य एक महत्वपूर्ण नैतिक दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं। न्याय, समानता, गरिमा, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों को प्रशासनिक निर्णय लेने को प्रभावित करना चाहिए। इसलिए लोक सेवकों में ईमानदारी, सहानुभूति, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता और वैचारिक साहस जैसे गुणों की आवश्यकता होती है।

सार्वजनिक सड़क पर अवैध अतिक्रमण का सामना करने वाले एक जिला अधिकारी का उदाहरण लें। अधिकारी को कानून का पालन कराना ही होगा। हालांकि, यदि अतिक्रमण में ऐसे संवेदनशील परिवार शामिल हैं जिनके पास कोई वैकल्पिक आश्रय नहीं है, तो पुनर्वास के बिना तत्काल दंडात्मक बेदखली से कानूनी अनुपालन तो हो सकता है, लेकिन गंभीर नैतिक प्रश्न खड़े होते हैं। इसलिए अधिकारी को वैधता को मानवीय कार्यान्वयन के साथ संतुलित करना चाहिए, जहाँ भी उपलब्ध हो वैध पुनर्वास तंत्र का उपयोग करना चाहिए।

इसी तरह, सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के दौरान, एक प्रशासक को प्रतिस्पर्धी मूल्यों - व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सार्वजनिक सुरक्षा, आर्थिक गतिविधि और संवेदनशील आबादी की सुरक्षा - से जुड़े त्वरित निर्णय लेने पड़ सकते हैं। नैतिक निर्णय लेने के लिए आनुपातिकता (proportionality), पारदर्शिता और साक्ष्य-आधारित तर्क की आवश्यकता होती है।

हालाँकि, विवेक (discretion) स्वयं खतरनाक हो सकता है। जवाबदेही के बिना अत्यधिक विवेक से भ्रष्टाचार या चयनात्मक प्रवर्तन हो सकता है। इसलिए, नैतिक विवेक के साथ दर्ज किए गए कारण, पारदर्शिता, शिकायत निवारण, ऑडिट और संस्थागत देखरेख होनी चाहिए।

इसलिए आदर्श सिविल सेवक न तो नियमों के प्रति अंधा नौकरशाह है और न ही ऐसा प्रशासक जो व्यक्तिगत नैतिकता को कानून से ऊपर रखता है। इसके बजाय, अधिकारी को संवैधानिक और वैधानिक सीमाओं के भीतर सैद्धांतिक विवेक का प्रयोग करना चाहिए।

अंततः, नैतिक शासन के लिए तीन पूरक तत्वों की आवश्यकता होती है: सीमा के रूप में 'कानून', दिशा-निर्देश के रूप में 'संवैधानिक मूल्य', और उद्देश्य के रूप में 'जनहित'। ऐसा दृष्टिकोण प्रशासन को यांत्रिक नियम प्रवर्तन से जिम्मेदार और मानवीय जनसेवा में बदल देता है।

Dream | Dare | Deliver

GS-5 (Current Affairs)

Q5. वी-डैम का लोकतंत्र सूचकांक (V-Dem's Democracy Index)

"लोकतंत्र के मापन के लिए केवल चुनावों के अस्तित्व से आगे बढ़कर संस्थाओं की गुणवत्ता, अधिकारों, भागीदारी और राजनीतिक शक्ति पर नियंत्रण का परीक्षण करना आवश्यक है।" लोकतंत्र को मापने के लिए वी-डैम के दृष्टिकोण के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

उत्तर: लोकतंत्र का मूल्यांकन अक्सर चुनावों और प्रतिनिधि संस्थाओं की उपस्थिति के माध्यम से किया जाता है। हालाँकि, केवल चुनाव किसी राजनीतिक व्यवस्था की गुणवत्ता को पूरी तरह से नहीं दर्शा सकते। वैरायटीज़ ऑफ़ डेमोक्रेसी (V-Dem) प्रोजेक्ट एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाता है, यह स्वीकार करते हुए कि लोकतंत्र में चुनावी प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ नागरिक स्वतंत्रताएँ, संस्थागत सीमाएँ, भागीदारी, विचार-विमर्श और समानता शामिल हैं।

वी-डैम पांच प्रमुख आयामों की पहचान करता है: चुनावी, उदारवादी, सहभागितापूर्ण, विचार-विमर्श संबंधी (deliberative), और समतावादी लोकतंत्र।

- **चुनावी आयाम (Electoral dimension):** यह जांच करता है कि क्या चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष हैं, क्या राजनीतिक दल प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं, क्या मताधिकार व्यापक है और क्या नागरिकों के पास सार्थक राजनीतिक विकल्प हैं।
- **उदारवादी आयाम (Liberal dimension):** यह कार्यपालिका के अधिकार पर नियंत्रण, कानून के शासन, न्यायिक और विधायी स्वतंत्रता, और नागरिक स्वतंत्रताओं के संरक्षण की जांच करके आगे बढ़ता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि कोई सरकार कार्यकारी शक्ति को सीमित करने के लिए डिज़ाइन की गई संस्थाओं को कमजोर करते हुए भी चुनाव जीत सकती है।
- **सहभागितापूर्ण आयाम (Participatory dimension):** यह समय-समय पर होने वाले चुनावों से परे नागरिकों के राजनीतिक रूप से भाग लेने के अवसरों की जांच करता है। यह नागरिक समाज, प्रत्यक्ष भागीदारी और अन्य माध्यमों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जिनके माध्यम से नागरिक सार्वजनिक निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं।
- **विचार-विमर्श संबंधी आयाम (Deliberative dimension):** यह इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि क्या राजनीतिक निर्णयों को केवल शक्ति या हितों के बजाय तर्कसंगत सार्वजनिक चर्चा के माध्यम से उचित ठहराया जाता है। राजनीतिक विमर्श की गुणवत्ता इस प्रकार लोकतांत्रिक मूल्यांकन का हिस्सा बन जाती है।
- **समतावादी आयाम (Egalitarian dimension):** यह परीक्षण करता है कि क्या राजनीतिक अधिकार और संसाधन नागरिकों के लिए सार्थक राजनीतिक प्रभाव का प्रयोग करने हेतु पर्याप्त रूप से समान रूप से वितरित किए गए हैं। औपचारिक समानता राजनीतिक भागीदारी में पर्याप्त असमानताओं के साथ सह-अस्तित्व में हो सकती है।

वी-डैम की नवीनतम लोकतंत्र रिपोर्ट (2026 डेटासेट के आधार पर) के अनुसार, 2025 के अंत में दुनिया में 92 तानाशाही (autocracies) और 87 लोकतंत्र थे, जबकि दुनिया की लगभग 74% आबादी तानाशाही के तहत रह रही थी। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लोकतंत्र के सबसे गंभीर रूप से प्रभावित आयामों में से एक के रूप में भी पहचानता है।

ऐसे मापन का महत्व पूर्ण लोकतांत्रिक पतन से पहले लोकतांत्रिक गिरावट (backsliding) की पहचान करने में निहित है। एक देश मीडिया की घटती स्वतंत्रता, कमजोर होते संतुलन एवं नियंत्रण (checks and balances) या नागरिक स्वतंत्रताओं के क्षरण का सामना करते हुए भी चुनाव कराना जारी रख सकता है।

फिर भी, लोकतंत्र सूचकांकों को त्रुटिहीन रैंकिंग के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। वी-डैम स्वयं अपने अनुमानों में अनिश्चितता को स्वीकार करता है, और कई संकेतक विशेषज्ञ आकलनों पर निर्भर करते हैं। इसकी कार्यप्रणाली कई विशेषज्ञों और अलग-अलग संकेतकों के माध्यम से इसे हल करने का प्रयास करती है।

भारत और अन्य लोकतंत्रों के लिए, बड़ा सबक यह है कि लोकतांत्रिक गुणवत्ता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि चुनाव कौन जीतता है, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि क्या संस्थाएं सत्ता पर अंकुश लगाने, अधिकारों की रक्षा करने, सार्थक भागीदारी को सक्षम करने और बहुलवादी सार्वजनिक बहस को बनाए रखने में सक्षम बनी रहती हैं।

इस प्रकार, वी-डैम का दृष्टिकोण एक अंतिम बिंदु के रूप में "चुनावी लोकतंत्र" से एक बहुआयामी संस्थागत प्रक्रिया के रूप में लोकतंत्र की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करता है।

